क्या बिच्छू का भी कोई गीत हो सकता है...!

फिल्म 'द सांग ऑफ द स्कार्पियन' में लोक गीतों के जरिये अनूप सिंह वापस लौटे हैं। दो अगस्त को होने वाले लोकर्नो फिल्म फेस्टिवल में उनकी फिल्म का प्रीमियर है। 'एकती नादिर नाम' (एक नदी का नाम) और 'किस्सा- एक अकेले भूत की कहानी' के जरिये पहचान बनाने वाले अनूप सिंह की नई फिल्म 'द सांग ऑफ द स्कार्पियन' उनका सपना थी।

चेन्नै से गौतमन भास्करन

फिल्म 'किस्सा...' में भारत विभाजन के दिनों की दर्दनाक कल्पनाओं को दिखा कर उन्होंने अपनी प्रतिभा दिखाई थी। इस फिल्म के नायक के तौर पर इरफान खान से बेहतर कोई नहीं हो सकता था।

दार-ए-सलाम के सिक्ख परिवार में जन्मे अनूप सिंह बाद में स्विट्ज़रलैंड रहने चले गए, जहां उन्होंने लोक गीतों की कल्पना की और इसे फिल्म में साकार किया। इरफान खान और ईरानी अभिनेत्री गोलशिफ्तेह फरहानी के अभिनय की फिल्म बना कर लोकर्नो में पेश करने जा रहे अनूप सिंह की इस फिल्म के गाने सुनने लायक हैं।

इसके बोल हर किसी के जेहन में समा जाएंगे। गोलशिफ्तेह फरहानी ने असगर फरहादी की फिल्म 'एली' में काम किया है, जो दो लोगों के बीच दु:खद किस्सों की कहानी है, वहीं 'द पेशंस स्टोन' में भी गोलशिफ्तेह का काम सराहा गया था। यह फिल्म उस कामुक की कहानी है, जिसमें गोलशिफ्तेह उसकी पत्नी बनी थीं और जो उसकी कामुकता की शिकार रहती हैं। ऐसी ही कई कहानियों ने गोलशिफ्तेह के अभिनय को निखारा है। कुछ साल पहले अबूधाबी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के पहले जब मेरी गोलशिफ्तेह से बात हुई थी, तब वह निराश थीं और उन्होंने मुझसे कहा था कि ईरानियों की निगाह में भले ही मैं बुरी हूं, लेकिन मैंने चुनौतियों से लड़ना तय किया है। मैं शर्त लगा सकती हूं कि शेर की पूंछ से मैं खेल रही हूं। मैंने देखा कि वह इसमें सफल रही।

जो लोग गोलशिफ्तेह को नहीं जानते, उनके लिए ये लड़की किसी योद्धा से कम नहीं है। एक लड़की, जो कट्टरपंथियों के देश तेहरान में पली-बढ़ी, जिसने अपने

स्कूली दिनों में ही स्कूल मैनेजमेंट के खिलाफ आवाज उठाई थी। वो सोचती थी कि जब उसकी बड़ी बहन का प्रेमी हो सकता है, तो मेरा क्यों नहीं।

उसने किसी से संबंध भी बनाए थे और मां-बाप से झूठ भी बोला था। वह अपने भाई-बहनों में बहुत हिम्मत वाली थी और हमेशा रूढ़ियां तोड़ती थी। जब वह सोलह साल की हुई, तो उसने बुरका फेंक दिया था। ईरान जैसे देश में कोई लड़की यह हिम्मत नहीं दिखा पाती, लेकिन उसने किया। फरहानी न केवल लड़कों के कपड़े पहन कर साइकल चलाती थी, बल्कि मां-बाप की इच्छा के खिलाफ एक्टिंग सीखने जाती थी। मां-बाप चाहते थे कि वह पियानो सीखे, लेकिन उसने ड्रामा चुना। इस बिंदास बाला की शादी बीस की उम्र में ही कर दी गई थी। जब उसने रिडली स्कॉट की सीआईए थ्रिलर में लियोनार्डो डिकैप्रियो के साथ काम किया तो ईरानी अफसरों ने उसे परेशान किया कि वह पश्चिमी देशों की संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। तंग आकर वह पेरिस आ गई और उसका तलाक हो गया।

फ्रांस की खुली हवाओं में उसे आजादी महसूस हुई और उसके प्यासे अरमानों को यहां तरावट मिली। फ्रांस ने उसे दिल से स्वीकारा, लेकिन उसके लिए तब मुश्किल हुई, जब मैगजीन कवर के लिए उसे न्यूड पोज देना था। ईरानी धर्मगुरुओं ने उसे धमकियां दीं, लेकिन उसे तो आगे बढ़ना ही था। अनूप सिंह के मुताबिक फरहानी से अच्छी कोई अभिनेत्री हो ही नहीं सकती थी, जो फरहान के अपोजिट मेरी फिल्म में फिट होती।

क्या इरफान कभी सेल्युलाइड खलनायक रहे हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता। **'द सांग ऑफ द स्कार्पियन'** जैसी फिल्म में इरफान ही विलेन के लिए ठीक हैं। राजस्थान की पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म के लिए वे ही उम्दा कलाकार थे, जो रेत, बिच्छुओं और लोक गीतों के बीच बुनी इस कहानी के लिए चेहरा हो सकते हैं। यह कहानी प्यार के उतार-चढ़ाव, बदले की भावना और लोक गीतों पर बनी है, जिसकी नायिका नूरान आदिवासी है, जो लापरवाह और बिंदास है। वो यहां प्राचीन कलाएं सीखने आती है, वहीं आदम (इरफान खान) हैं, जो ऊंट का व्यापारी है, जिसकी दादी से लोक गीत सुन कर नूरान वहीं रुक जाती है। नूरान और आदम का प्यार परवान चढ़ता, उसके पहले ही विश्वासघात कर नूरान बिच्छू का जहर दे देती है। इस बेवफाई में बुने गीत उन लोगों के लिए खास हैं, जिनके दिल टूटे हैं।

अनूप सिंह कहते हैं कि प्यार में घायल लोगों के लिए इस फिल्म के गीत मरहम की तरह हैं। आखिर में नूरान को पाने के लिए आदम निकल पड़ता है। प्यार, बदला और क्रूरता के बीच भावनाओं और मूल्यों को सहेजती कहानी है

■ **'द सांग ऑफ द स्कार्पियन'।**